चम्बलघाटी मध्यप्रदेश में
भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट(डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा से चित्रकला में
पीएच. डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध छात्रा :

दिव्या सिंह
चित्रकला विभाग

संकाय प्रमुख की संस्तुति हेतु :

प्रो. रागिनी रॉय,
अध्यक्ष, चित्रकला विभाग, कला संकाय

शोध निर्देशक :

प्रो. गिरिराज कुमार,
कला संकाय

2015

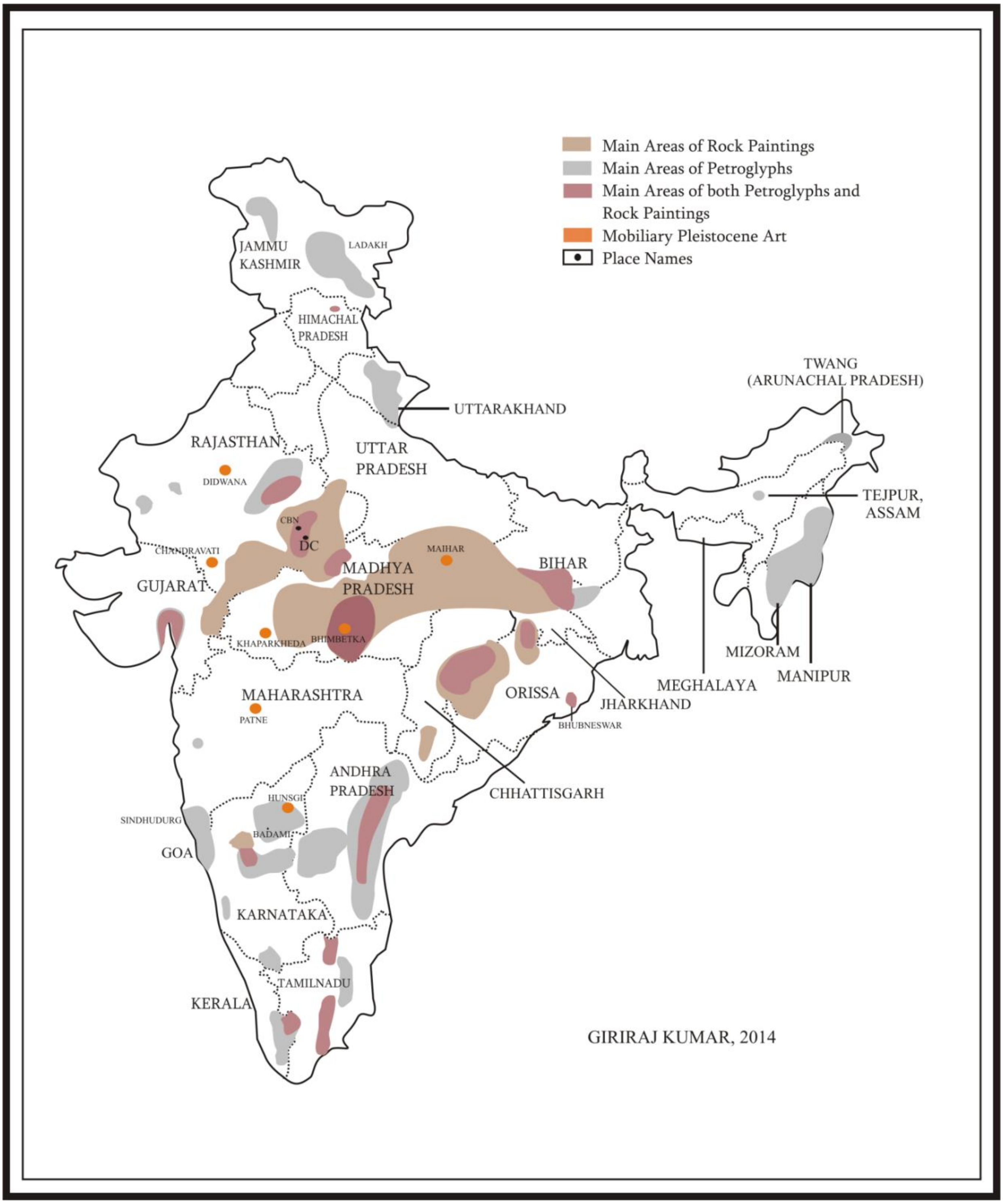

मनचित्र 1. भारत के मुख्य शैलचित्र क्षेत्र एवं चल पुराश्मीय कला स्थल *Map showing the main regions of rock art and mobiliary Pleistocene art in India.*

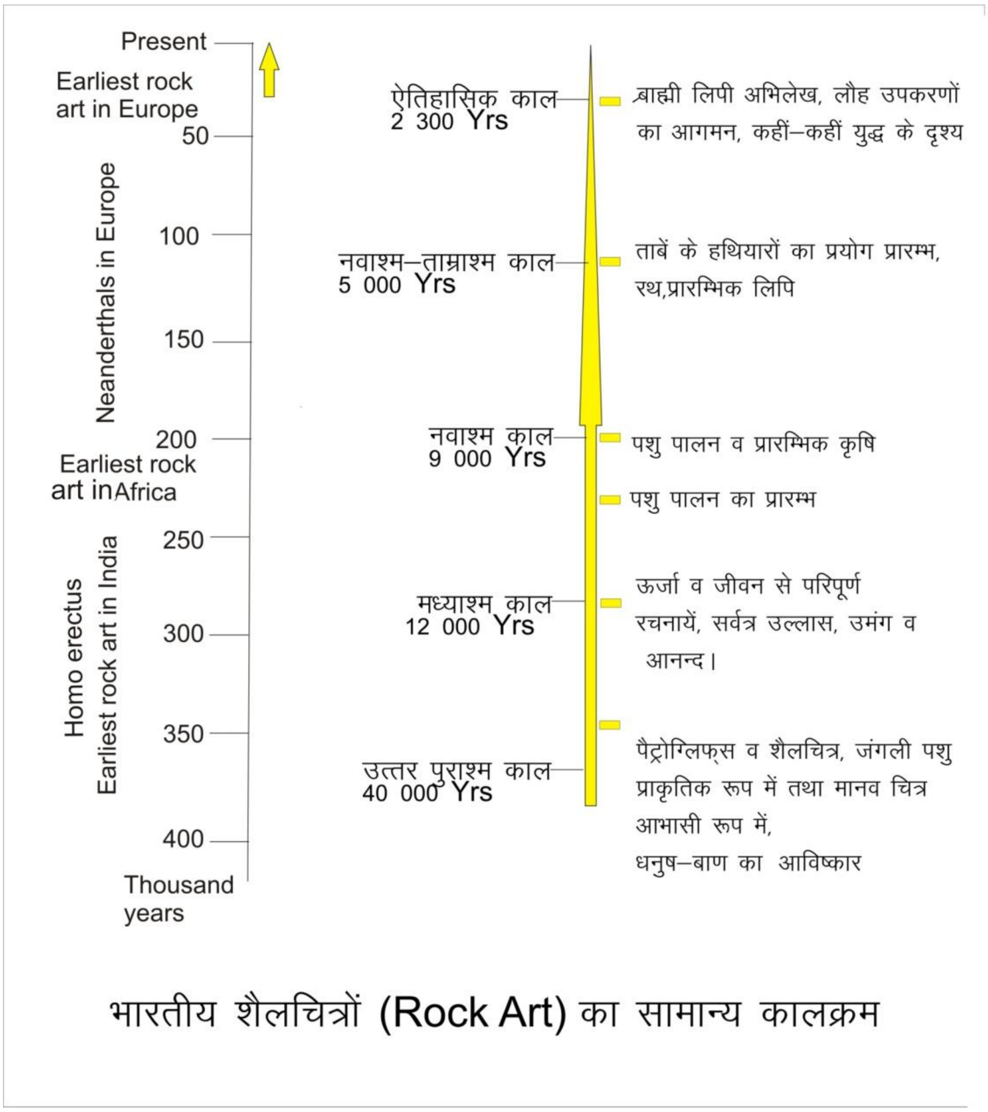

मनचित्र 2. भारतीय शैलचित्रों (Rock Art) का सामान्य कालक्रम

चम्बलघाटी मध्यप्रदेश में

भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

शोध संरचना

विषय सूची

शोध संकल्पना

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर (Variables)

कार्य प्रणाली

1. अनुसंधान अभिकल्प (Research desigen)
2. तकनीकि उपकरण
   - क. प्राथमिक
   - ख. द्वितीयक स्रोत
3. Sample Size
4. साक्षात्कार (Interview)
5. प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि (Data Collection)
6. सीमाएँ

अन्वेषण (Findings)

आधुनिक युग में शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन की प्रासंगिकता

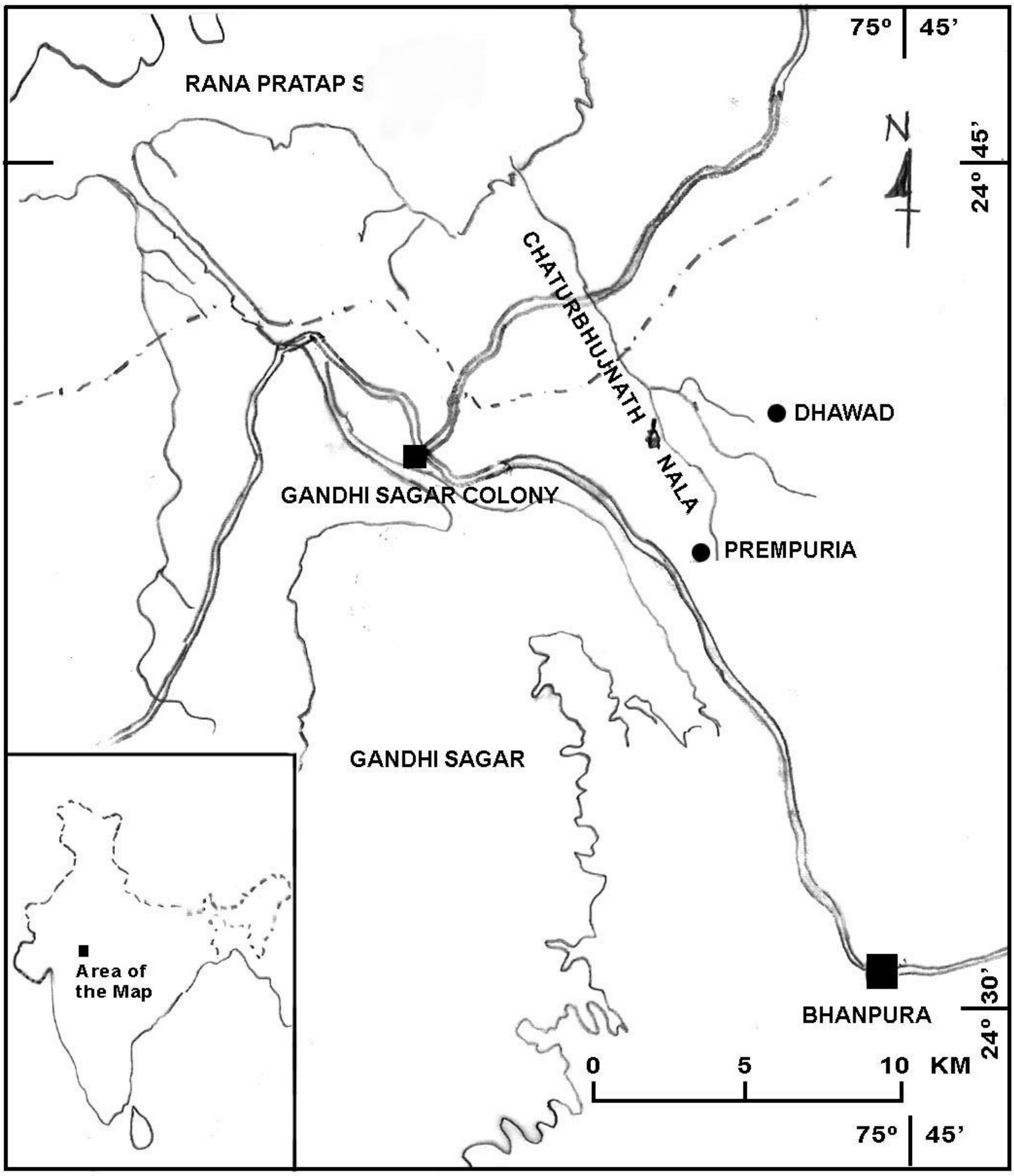

मानचित्र 3. भानपुरा क्षेत्र में शैलचित्रों के शैलाश्रय

चम्बलघाटी मध्यप्रदेश में

भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

शोध संकल्पना

शैल चित्रकला मानव की सशक्त अभिव्यक्ति का प्राचीनतम उदाहरण है। शैलचित्र परम्परा मानव इतिहास के प्रारम्भ से लेकर अब तक चली आ रही है। शैलचित्र सामान्यतः खुली चट्टानों पर गुफाओं में एवं शैलाश्रयों की दीवारों और छत पर बनाये गये हैं। शैलचित्रों के अतिरिक्त मानव इतिहास के विभिन्न कालखण्डों में गीत, संगीत, नृत्य व अन्य विधाओं को भी मानव ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया होगा, परन्तु शैलचित्रों के अतिरिक्त अन्य माध्यम में की गयी अभिव्यक्ति काल के थपेड़ों में सुरक्षित नहीं रह सकीं। अतः पुरामानव के संज्ञानात्मक एवं सांस्कृतिक विकास को जानने के लिए शैलचित्र महत्वपूर्ण साधन हैं। अतः शैलचित्र मानव की सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध कलाकृतियाँ हैं। अतः इनके कलात्मक अध्ययन से भारतीय कला इतिहास के नवीन पृष्ठ लिखे जा सकते हैं।

शैलचित्र बनाने की तकनीक

शैलचित्र मुख्यतः दो प्रकार से बनाये जाते हैं।

1–चट्टान की सतह से कुछ निकालकर जैसेः–

क– ठोक–ठोक कर (Pecking)
ख– खोदकर (Scooping)
ग– खरोंचकर (Engraving)
घ– घिसकर (Abrasion)
ड़– गुफा की नर्म सतह पर अंगुलियाँ घुमाकर (Finger Fluitings)

उपरोक्त तकनीक से बने चित्र *पैट्रोग्लिफ्स (Petroglyphs)* कहलाते हैं।

2–चट्टान की सतह पर रंग लगाकर जैसेः–

क– तूलिका से
ख– तरल रंगों को मुंह से छिड़क कर (स्प्रे करके)
ग– अंगुली से

उपरोक्त तकनीक से बने चित्रों को *रॉक पेंटिग* कहते हैं।

विषय वस्तु

शैलचित्रों में मुख्यतः वन्य प्राणी, मानव चित्र, पालतु पशु एवं उनकी गतिविधियाँ, चित्र संयोजन, ज्यामितीय चित्र, डिज़ाइन, आदि पाये जाते हैं। इन्हें बनाने में Haematite red, Terravetta green, Calcium carbonate white, आदि खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है। इनके अतिरिक्त कप मार्क्स (चट्टान की सतह पर ठोक–ठोक कर बनायी गयी सामान्यतः गोल आकृतियाँ) एवं रेखा चित्रों के रूप में पैट्रोग्लिफ्स भी पाये जाते हैं।

शैलचित्र दक्षिणी ध्रुव के अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व में पाये जाते हैं। विश्व के सर्वाधिक सम्पन्न तीन देशों में भारत भी एक है। अन्य दो देश हैं–आस्ट्रेलिया एवं दक्षिण अफ्रीका। चीन, सउदी अरब एवं ब्राजील भी शैलचित्र सम्पदा के धनी देश हैं।

शैलचित्र सम्पदा में भारत

शैलचित्र सम्पूर्ण भारत वर्ष में पाये जाते हैं। आग्नेय, अवसादी एवं Metamorphosed चट्टानी क्षेत्रों में शैलचित्र स्थल भारत में पूर्व से पश्चिम तक व उत्तर से दक्षिण तक खुली चट्टानों पर नदी नालों घाटियों एवं गुफाओं में पाये जाते हैं।

भारत में शैलचित्रों के लिए मध्य भारत सर्वाधिक सम्पन्न क्षेत्र है। यहाँ विंध्याचल क्षेत्र में स्थित भीमबेटका को यूनेस्को द्वारा सन् 2003 में विश्व शैलचित्र धरोहर स्थल घोषित किया गया है। चम्बलघाटी में चतुर्भुजनाथ नाला विश्व की सबसे लम्बी शैलचित्र वीथिका है, यहाँ के शैलचित्रों में मानव के आखेट युग से पशुपालन युग में प्रवेश के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं (कुमार 2007, कुमार एवं प्रधान 2008)।

भानपुरा के समीप इन्द्रगढ़ की पहाड़ी में स्थित दरकी–चट्टान गुफा में विश्व के प्राचीनतम पैट्रोग्लिफ्स पाये गये हैं (सम्भवतः तीन लाख से पाँच लाख या इससे भी अधिक प्राचीन) (बेडनरिक, कुमार, वाचमेन एवं राबर्ट 2005)।

ऊपरी विंध्याचल क्षेत्र, मिर्जापुर जिले में उत्तर प्रदेश से कौआखोह व सुवा खोह शैलचित्रों में प्रमुख स्थल हैं। उड़ीसा में लेखा मोड़ा, कर्नाटक में बादामी व केरल में एडेक्कल गुफा भी महत्वपूर्ण केंन्द्र हैं।

भानपुरा क्षेत्र में शैलचित्र

चम्बल घाटी में भानपुरा–गाँधी सागर क्षेत्र शैलचित्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। भानपुरा क्षेत्र में दोंनो प्रकार के शैलचित्र पाये जाते हैंः पैट्रोग्लिफ्स एवं रंग से बने शैलचित्र यहाँ के प्रमुख शैलचित्र स्थल हैंः–गाँधी सागर (GNDH), चिब्बड़नाला (CHIB), मोडी (MODI), दरकी–चट्टान, चतुर्भुज नाथनाला (CBN)। इनके अतिरिक्त शैलचित्रों के अन्य स्थल हैंः–चँवरियादेह (CNW), खिलचीपुर (KLP), Maleseri (MLS), गोलम्बानाला (GLB), रेवाल्की (RWL), खानवाला (KNW), अन्तरलिया (ANT) बबुलदा (BBL), द.प. चिब्बड़नाला (CHIB), Kathiriakund (KTR), Sitakhardi (SITA), Bijolia falls (BIJ), इन्द्रगढ़ (INDR), बिल्लीखों (BLK), Zhintakho (ZNT), बड़ा रामकुण्ड (BRK), छोटा रामकुण्ड (CRK), गेबसाहेब (GEB) इनमें दरकी–चट्टान के शैलचित्रों का गहन अध्ययन किया जा रहा है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन वी. एस. वाकणकर (1973, 2005), रमेश कुमार पंचोली, टिलनर (Tilner), गिरिराज कुमार (1982, 2002 कुमार et al, 2002), और जॉन क्लोट्स (2004), आदि के द्वारा किया गया है। गिरिराज कुमार ने 2008 में चर्तुभुजनाथ नाला के शैलचित्रों का सर्वेक्षण (जी. कुमार 2007), व विश्लेषणात्मक अध्ययन (जी. कुमार एवं प्रधान 2008) किया है तथा इन्होंने इस क्षेत्र की लोक कला में समाहित कलात्मक परम्परा का भी अध्ययन किया (कुमार एवं भट्ट 2008)। भारत तथा भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों से सबंधित साहित्य (जे. गुप्त 1967, वी. एस. वाकणकर 1973, 1978 ,2005, 2008, वी. एस. वाकणकर व ब्रूक्स 1976, वाई. मठपाल 2005, के. के. चक्रवर्ती व रॉबर्ट जी. बेडनरिक 2008) का अध्ययन कर मैं शैलचित्रों को समझने का प्रयास कर रही हूँ। शैलचित्रों को शैलचित्र स्थल पर जाकर भी समझने का प्रयास किया है। शैलचित्र विज्ञान के अध्ययन के लिए, मैं रॉबर्ट जी. बेडनरिक द्वारा रचित पुस्तक रॉक आर्ट साइंस (2004) का भी अध्ययन करूँगी।

शैलचित्र स्थलों के अध्ययन से मुझे शैलचित्रों को उनके प्राकृतिक रूप में देखने एवं उनके कलात्मक प्रभाव को उनके प्राकृतिक परिवेश में समझने का अवसर मिला। इन पर जलवायु के प्रभाव तथा चित्रों का अध्यारोपण (Supremposition) रूप एवं शैलचित्रों के वैज्ञानिक अध्ययन में इसकी महत्ता को जाना।

परिकल्पना

1. शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

प्राप्त साहित्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय शैलचित्र धरोहर को वर्तमान के कलाकारों द्वारा नज़र अंदाज़ किया जा रहा है। शैलचित्रों की प्रारम्भिक अध्येयताओं ने मूलतः उनकी विषय वस्तु, प्राचीनता एवं चित्रों के काल निर्धारण पर विशेष बल दिया है। शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन को इन्होंने छुआ भर है। यशोधर मठपाल ने भीमबेटका के शैलचित्रों के अध्ययन में विषय वस्तु के साथ–साथ कलात्मकता का समावेश किया है। परन्तु अभी तक शैलचित्रों पर किया गया कोई भी अध्ययन पूर्णतः कलात्मक अध्ययन को समर्पित नहीं है। अपने शोध प्रबन्ध *'चम्बल घाटी मध्यप्रदेश में भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन'* में, मैं इस दायित्व को निभाने का प्रयास करूँगी।

2. शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन के मापन का आधार

शैलचित्रों की प्रकृति के कारण शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन में भारतीय *'षडांग'* पूर्णतः न्याय नहीं कर पाते। अतः गिरिराज कुमार ने शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन मापन के लिए आधार बनाये हैं जो इस प्रकार हैंः–

1. शैलचित्रों की प्रकृति
2. रेखा (Lines)
3. रंग
4. रूप (Form) क– मूर्त रूप एवं इनके प्रकार
   ख– अमूर्त रूप
   ग– अन्य प्रकार
5. आकार (Size)
6. शैली (Style)
7. तकनीक (Technique and Treatment)
8. क्रिया कलाप एवं संयोजन (Activities and Composition)
9. जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
10. अन्य विशेषताऐं

3. शैलचित्रों के सृजन का भाव (आत्मा)

जब तक कलाकार स्वयं आकर शैलचित्रों का अर्थ न समझाये तब तक शैलचित्रों को समझना बहुत ही कठिन है। यही नियम समकालीन कलाकृतियों पर भी लागू होता है। अतः शैलचित्रों के अर्थ निकालने की अपेक्षा मैं उनके पूर्ण परिवेश में उनका भाव समझने का प्रयास करूँगी तथा आवश्यकता हुई तो नये आधार भी विकसित करने का प्रयास करुँगी। मेरा अधिकतम प्रयास शैलचित्रों की कलात्मक विशेषताओं को समझने का रहेगा तथा मैं उनके पूर्ण परिवेश में उनके भावों को समझने के लिए तत्पर रहुँगी।

4. भारतीय दृश्य कला की परम्परा को समझने का प्रयास

अजंता, एलोरा, पिथलखोरा, बाघ आदि गुफाओं में ऐतिहासिक गुहा चित्र के रूप में भारतीय चित्र कला की एक समृद्ध परम्परा रही है। किन्तु इस समृद्ध कला परम्परा का प्रारम्भ कब हुआ होगा, यह एक जटिल प्रश्न है। भारतीय अश्म युगीन शैलचित्रों की समृद्ध परम्परा के कलात्मक अध्ययन में इस प्रश्न का उत्तर मिल सकता है। मेरा शोध कार्य इस दिशा में एक विनम्र प्रयास होगा।

उद्देश्य

1. मेरे शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन के माध्यम से इस क्षेत्र की प्रारम्भिक कला परम्परा (अश्मयुगीन एवं प्रारंभिक पशुपालन युगीन) का अन्वेषण एवं अध्ययन है।

2. भानपुरा के शैलचित्रों में अंकित विभिन्न मानव आकृतियों के क्रियाकलाप तथा उनको बनाने के लिए प्रयुक्त की गई विभिन्न तकनीकि व माध्यम को अध्ययन करने का प्रयास करूँगी।

3. विभिन्न कालों में शैलचित्रों को खुली सतह को सीमा रहित केनवास के रूप में उपयोग कर बनाया गया है। मैं इसे ठीक से समझने का प्रयास करूँगी।

4. विभिन्न कालों में बने शैलचित्रों में शैलीगत परिवर्तन को विशेष रूप से अध्ययन करने का प्रयास करूँगी।

5. शैलचित्र चित्रकला के प्रारम्भिक प्रमाण हैं; चित्रकला के विकास में इनका विशेष योगदान है परन्तु अभी तक शैलचित्रों पर किया गया अध्ययन पूर्ण रूप से कलात्मक अध्ययन पर अधारित नहीं है। मैं अपने शोध प्रबन्ध में इस कार्य को पूरा करने का प्रयास करूँगी।

6. मैं समकालीन चित्रकला में शैलचित्रों के प्रभाव को समझने का प्रयास करूँगी।

चर (Variables)

1. मौसम तथा जलवायु

2. उपलब्ध सुविधाऐं

3. प्राकृतिक संसाधन–जल तथा प्रकाश

4. सहयोगी व्यक्ति/व्यक्ति समूह

5. शैलचित्र स्थल पर शोध कार्य की दृष्टि से किये गये अध्ययन के नवीन प्रकार को विकसित करने का रहेगा।

कार्य प्रणाली

1. अनुसंधान अभिकल्प (Research desigen)

शैलचित्र, शैलचित्र स्थल एवं क्षेत्र में रहने वाले पशुपालन और जनजातियों का प्रलेखन (documentation) एवं अध्ययन।

2. तकनीकि उपकरण : कैमरा, कम्पास, मापन का फीता, आवर्धक लैन्स (magnifying glass), प्राथमिक उपचार के लिए आवश्यक सामग्री, सैटेलाइट मेप (मानचित्र) रेखांकन तथा चित्रण के लिए आवश्यक सामग्री, इण्टरनेट, विषय से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन। फोटोग्राफी में IFRAO Scale एवं पुरातात्त्विक Scale का उपयोग।

पूरे विश्व में शैलचित्रों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए IFRAO(International Fadration of Rock Art Organizations) ने Coloured Scale विकसित किया है जिसे शैलचित्र अध्ययता एक मानक Scale के रूप में प्रयुक्त करते हैं। यह 10.0 cm का Scale है तथा इसमें micro Photography की सुविधा भी उपलब्ध है। इस Scale को साथ रखकर शैलचित्र की Photography करने के वैज्ञानिक कारण हैं। समय के परिवर्तन के साथ शैलचित्रों का क्षरण होता है। Photography में प्रयोग की गयी dyes (रंग) भी Faid (धुंधला) हो जाती हैं। चूंकि IFRAO के रंग Codified(निश्चित) हैं इसलिए Photograph के धुंधले रंगों का Scale IFRAO Scale के रंगों के मूल Code तक बढ़ाने से हमें शैलचित्रों का मौलिक रंग प्राप्त हो जाता है।

क. प्राथमिक स्रोत : शैलचित्रों की फोटोग्राफी, रेखांकन तथा चित्रण, सादृश्य चित्रण (coppying) को उनके प्राकृतिक परिवेश में समझने का प्रयास।

ख. द्वितीयक स्रोत : शोध–पत्रिका, शोध–पत्र, पुस्तकें तथा शैलचित्रों की छायाप्रति, मानचित्र, वेबसाइट आदि का अध्ययन।

3. **Sample Size :** मैं भानपुरा क्षेत्र के गाँधीसागर, चिब्बड़नाला, मोडी तथा अन्य स्थलों के (100–150) शैलचित्रों, शैलचित्र संयोजनों का अध्ययन करूँगी।

4. साक्षात्कार (Interview)

1. अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित विद्वानों एवं जानकारों का साक्षात्कार।
2. शैलचित्र विशेषज्ञों का साक्षात्कार।

5. प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि (Data Collection)

1. शैलचित्रों एवं उनके परिवेश का छाया चित्रण एवं सादृश्य चित्रण
2. रेखांकन तथा चित्रण
3. आवश्यक सूचनाओं का संग्रह

6. सीमाएँ

1. अधिकांशतः शैलचित्र जंगल में पाये जाते हैं अतः शैलचित्रों के अध्ययन में मौसम की सीमाएँ होती हैं।

2. सर्वाधिक प्राचीन शैलचित्र वर्षा जल एवं प्राकृतिक प्रभाव के कारण धुंधले हो गये हैं। उन पर परवर्ती अश्मयुगीन एवं पशुपालन युगीन चित्र का भी अध्यारोपण हुआ है अतः मैं ऐसे चित्रों का सादृश्य चित्रण कर अध्ययन करूँगी।

3. शैलचित्र सूखे मौसम की अपेक्षा आर्द्र मौसम में अच्छे दिखायी देते हैं। अतः वर्षा काल एवं शीतकाल इनके अध्ययन के लिए उपयुक्त समय होता है।

4. पैट्रोग्लिफ्स प्रातः कालीन एवं सायं कालीन सूर्य के तिरछे प्रकाश में अच्छे दिखाई देते हैं।

5. बहुत से चित्र ऐसे हैं जिनको देखपाना मुश्किल है।

अन्वेषण (Findings)

शैलचित्रों का उनके परिवेश में प्रत्यक्ष अध्ययन, प्रलेखन (documentation) एवं तथ्यों का कलात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन मेरे शोधकार्य का प्रमुख आधार रहेंगे।

आधुनिक युग में शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन की प्रासंगिकता

एक चित्रकार अपनी पहचान स्वयं की शैली, तकनीक तथा रंगों के माध्यम से बनाता है जिसके लिए उसे कला की परम्परा को जानना बहुत ज़रूरी है। भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्र कला की दृष्टि से आकृति, शैली, कलात्मक अभिव्यक्ति प्रकृति तथा जीवन शैली के प्रस्तुतीकरण के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन का इस दिशा में विशेष योगदान रहेगा।

इस प्रकार मेरा शोध प्रबंध भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों के कलात्मक स्वरूप को प्रकट कर दृश्य कला क्षेत्र में योगदान का विनम्र प्रयास होगा।

दिनांक :10.03.15 **शोध छात्रा :**

चम्बलघाटी मध्यप्रदेश में
भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

विषय सूची

भूमिका :

- शैल चित्र : विश्वव्यापी कलात्मक धरोहर
- भारत में शैलचित्रों की परम्परा
- भारत में पाये जाने वाले शैलचित्र क्षेत्र

अध्याय 1ः भानपुरा क्षेत्र

1.1 भानपुरा क्षेत्र का भौगोलिक परिवेश

1.2 भानपुरा क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा : शैलचित्र, पुरातत्त्व, इनकी प्राचीनता एवं कालक्रम, प्राचीन मन्दिर, शिल्पकला, आदि के परिप्रेक्ष्य में

1.3 भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का पूर्व में किया गया अध्ययन

1.4 भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कालक्रम : पुराश्मीय, मध्याश्मीय, नवाश्मीय, नवाश्मीय– ताम्राश्तीय, ऐतिहासिक

अध्याय 2ः भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्र स्थल

2.1 चम्बल घाटी गाँधीसागर के शैलचित्र

2.2 भानपुरा के पठार चिब्बड़नाले के शैलचित्र

2.3 चम्बल घाटी मोडी के शैलचित्र

2.4 अन्य

अध्याय 3ः शैलचित्रों के कलात्मक अध्ययन का आधार

3.1 शैलचित्रों की प्रकृति
3.2 रेखा (Lines)
3.3 रंग
3.4 रूप (Form) क– मूर्त रूप एवं इनके प्रकार
ख– अमूर्त रूप
ग– अन्य प्रकार
3.5 आकार (Size)
3.6 शैली (Style)
3.7 तकनीक (Technique and Treatment)
3.8 क्रिया कलाप एवं संयोजन (Activities and Composition)
3.9 जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार

3.10 अन्य विशेषताऐं

अध्याय 4: शैलचित्रों में पशु, मानव एवं अन्य चित्रों का प्रलेखन (Documentation)

4.1 गाँधीसागर में स्थित शैलचित्र

4.1.1 शैलाश्रयों का वर्णन

4.1.2 शैलचित्र एवं विषय वस्तु

4.1.3 पशु एवं मानव चित्रों के प्रकार एवं उनकी विशेषताऐं

4.1.4 अन्य

4.1.5 टिप्पणी

4.2 चिब्बड़नाले में स्थित शैलाश्रय शैलचित्र

4.2.1 शैलाश्रयों का वर्णन

4.2.2 शैलचित्र एवं विषय वस्तु

4.2.3 पशु एवं मानव चित्रों के प्रकार एवं उनकी विशेषताऐं

4.2.4 अन्य

4.2.5 टिप्पणी

4.3 मोडी में स्थित शैलचित्र

4.3.1 शैलाश्रयों का वर्णन

4.3.2 शैलचित्र एवं विषय वस्तु

4.3.3 पशु एवं मानव चित्रों के प्रकार एवं उनकी विशेषताऐं

4.3.4 अन्य

4.3.5 टिप्पणी

अध्याय 5: शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन

5.1 पशु आकृतियाँ

5.1.1 अश्मयुगीन (Stone Age) विभिन्न पशु आकृतियाँ एवं शैली

क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ड़– आकार
च– शैली
छ– तकनीक

ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.1.2 नवाश्म, नवाश्म–ताम्राश्म युगीन (पशुपालन युग Pastoral Age) विभिन्न पशु आकृतियाँ एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.1.3 ऐतिहासिक (Historic) युगीन विभिन्न पशु आकृतियाँ एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.2 मानव आकृतियाँ

5.2.1 अश्मयुगीन (Stone Age) विभिन्न मानव आकृतियाँ एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.2.2 नवाश्म, नवाश्म–ताम्राश्म युगीन (पशुपालन युग Pastoral Age) विभिन्न मानव आकृतियाँ एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार

च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.2.3 ऐतिहासिक (Historic) युगीन विभिन्न मानव आकृतियाँ एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.3 अन्य आकृतियाँ, डिज़ाइन एवं उनकी शैली

5.3.1 अश्मयुगीन (Stone Age) विभिन्न आकृतियाँ, डिज़ाइन एवं उनकी एवं शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.3.2 नवाश्म, नवाश्म–ताम्राश्म युगीन (पशुपालन युग Pastoral Age) विभिन्न आकृतियाँ, डिज़ाइन एवं उनकी शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा
ग– रंग
घ– रूप
ङ– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

5.3.3 ऐतिहासिक (Historic) युगीन विभिन्न आकृतियाँ, डिज़ाइन एवं उनकी शैली
क– प्रकृति
ख– रेखा

ग– रंग
घ– रूप
ड़– आकार
च– शैली
छ– तकनीक
ज– क्रिया कलाप एवं संयोजन
झ– जीवन शैलीः शिरोभूषण(Head gears), आभूषण एवं पहनावा कालक्रमानुसार
ञ– अन्य

अध्यायः 6 विवेचना

6.1 शैलाश्रयानुसार एवं क्षेत्रानुसार शैलचित्रों में रुप आकृतियों का वितरण एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

6.2 रूप आकृतियों एवं कलात्मक तत्वों का विकास

6.3 शैलचित्र स्थल एवं उपलब्ध सतह के उपयोग का प्रकार (Pattern)

6.3.1 आखेट एवं भोजन संग्रह युग (Hunting-food gathering stage)

6.3.2 नवाश्म काल एवं नवाश्म–ताम्राश्म काल (early Pastoral Age)

6.4 अन्य विशेषताऐं (Observation)

6.5 कलात्मक परम्परा की निरन्तरता।

निष्कर्ष

सन्दर्भ सूची

- हिन्दी ग्रन्थ
- अंग्रेजी भाषा में लिखे ग्रन्थ
- शोध पत्रिकाएँ
- शोध पत्र
- समाचार पत्र
- वेबसाइट्स
- चित्रसूची
- मानचित्र

दिनांक :10.03.15 शोध छात्रा :

दिव्या सिंह
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका

भूमिका के अन्तर्गत मैं शैलचित्रों का परिचय देते हुए विश्व परिप्रेक्ष्य में शैलचित्रों की कलात्मक धरोहर का अध्ययन करूँगी तथा भारत में शैलचित्रों की परम्परा एवं भारत में पाये जाने वाले शैलचित्र क्षेत्र आदि को भी अपने अध्ययन में शामिल करूँगी।

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय में भानपुरा क्षेत्र का भौगोलिक परिवेश तथा भानपुरा क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा : शैलचित्र, पुरातत्त्व, इनकी प्राचीनता एवं कालक्रम, प्राचीन मन्दिर, शिल्पकला, आदि के परिप्रेक्ष्य में एवं शैलचित्रों का पूर्व में किये गये अध्ययन को जानने का प्रयास करूँगी तथा भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कालक्रम : पुराश्मीय, मध्याश्मीय, नवाश्मीय, नवाश्मीय–ताम्राश्तीय, ऐतिहासिक, आदि को समझने का प्रयास करूँगी।

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय में भानपुरा क्षेत्र के शैल स्थल चम्बल घाटी गाँधीसागर के शैलचित्र पठार, चिब्बड़नाले के शैलचित्र, चम्बल घाटी मोडी आदि क्षेत्रों पर जाकर वहाँ के शैलचित्र स्थलों का अध्ययन करूँगी।

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय में शैलचित्रों के आधारों को ध्यान में रखते शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत शैलाश्रयों के शैलचित्रों में चित्रित पशु आकृति, मानव आकृति एवं अन्य आकृतियों आदि का प्रलेखन (Documentation) प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी, जिसमें शैलचित्रों की विषय वस्तु एवं आकृति के प्रकार तथा उनकी विशेषताएँ आदि सम्मलित होंगी।

पंचम अध्याय

पंचम अध्याय के अन्तर्गत शैलाश्रयों के मानव चित्रों में अश्मयुगीन से नवाश्मयुगीन तक आए विभिन्न कलात्मक परिवर्तन को समझ उन्हें अपने शोध कार्य में प्रदर्शित करने का प्रयास करूँगी।

षष्ठम अध्याय

षष्ठम अध्याय में मैं भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का विवेचनात्मक अध्ययन करूँगी जिसमें शैलचित्रों में रुप आकृतियों का वितरण एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन, कलात्मक तत्वों का विकास तथा शैलचित्र स्थल, उपलब्ध सतह के उपयोग का प्रकार (Pattern), अन्य विशेषताऐं आदि के साथ कलात्मक परम्परा की निरन्तरता का अध्ययन सम्मलित करूँगी।

उपसंहार

भारतीय शैलचित्र धरोहर को आज के समय में नज़र अंदाज़ किया जा रहा है। अभी तक किया गया कोई भी अध्ययन पूर्ण रूप से कलात्मक अध्ययन पर आधारित नहीं है। अपने शोध प्रबन्ध ***'चम्बल घाटी मध्यप्रदेश में भानपुरा क्षेत्र के शैलचित्रों का कलात्मक अध्ययन'*** में, मैं इस कार्य को पूरा करने का प्रयास करूँगी।

Bibliography

BEDNARIK, R.G. 2007. *Rok art science: The scientific study of palaeoart.* New Delhi: Aryan books international.

BEDNARIK, R. G., G. KUMAR, A. WATCHMAN AND R. G. ROBERTS. 2005. Preliminary results of the EIP Project. *Rock Art Research* 22(2): 147-197.

BHAN, P.G. 1998. *Prehistoric art*. U.K: Cambridge university press.

CHATURVEDI, R. 2002. *Dramatic elements in modern art.* Jaipur: Publication Scheme.

GUPTA, J. 1967. *Pragaitihasik Bhartiya Chitrakala* (Hindi). New Delhi: National Publishing House.

KUMAR, G. 1983. *Archaeology of north-western Malwa: Prehistory and Protohistory.* Unpublished Ph.D. Thesis. Ujjain: Vikram University.

KUMAR, G. 1992. Rock art of upper Chambal valley, Part-II: Some observations. *Purakala*3 (1-2).

KUMAR, G. 2000-01. Chronology of Indian rock art: A fresh attempt. *Purakala* 11-12.

KUMAR, G. 2007. Documentation and preliminary study of the rock art of Chaturbhujnath nala. *Purakala* 17.

KUMAR, G. 2012. Beginning of cattle domestication in India with special reference to Chambal valley: Perspectives of rock art and archaeology. *Purakala* 22.

KUMAR, G. 2013. Parameters for artistic appreciation of rock art. *Purakala* 23. KUMAR, G. 2013. Parameters for artistic appreciation of rock art. *Purakala* 23: 47-53.

KUMAR, G. and A. PRADHAN. 2008. Study of rock art of Chaturbhujnath nala. *Purakala* 18: 23-52.

KUMAR, G., R. G. BEDNARIK, A. WATCHMAN AND R. G. ROBERTS. 2005. The EIP Project in 2005: aprogress report. *Purakala* 14–15: 13-68.

LORBLANHET, M. 2001. *Rock art in the old world.* New Delhi: Aryan books international.

MANI, B.R. and TRIPATHI, A. 2008. *Expression in Indian art vol.I*, Delhi: Agamkala prakashan.

MANI,B.R. and TRIPATHI, A. 2008. *Expression in Indian art vol.II*, Delhi: Agamkala Prakashan.

NEUMAYER, E. 1983. *Prehistoric Indian rock paintings*, Delhi: Oxford University Press.

NIRDIP. 1991. Elements of contemporary art in rock art. *Purakala* 2(2).

PANCHOLI, R.K.1978. *Bhanpura kshetra ke pragaitihasik chitrit shailashrya.*

Unpublished M.A. Dissertation. Ujjain: Vikram University.

PANDEY, S.K. 1993. *Indian rock art.* New Delhi: Aryan books international.

PRADHAN, S. 2001. *Rock art in Orissa.* New Delhi: Aryan books international.

WAKANKAR, V.S. 1978. *The dawn of Indian Art,* Ujjain: Bharti Kala Bhawan.

Journals

Art Journal (founded in 1978), the journal of Association of Art Historians.

International News Letter on Rock Art. The Journal of Comite International d' Art Rupestre, Foix, France.

Journal of Art Historiography, University of Glasgov.

Kala, the journal of Indian Art History Congress.

Oxford Art Journal.

Purakala, the Journal of Rock Art Society of India.

Rock Art Research, the Journal of Australian Research Association.

Website

http://mpuntold.blogspot.in.

http://en.wikipedia.org/wiki/Bhanpura.

http://www.triposo.com.

http://in.geoview.info/rock_shelter_art.

http://beyondlust.wordpress.com.

http://bradshawfoundation.com

चित्र

चित्र 1. क्वार्टज़ाइट में बनी दरकी–चट्टान गुफा, इन्द्रगढ़, म.प्र., विश्व का सम्पन्नतम् पूर्व पुराश्मीय कपमार्क स्थल *Daraki-Chattan (DC) Cave in the quartzite buttresses of Indragarh hill. b. Daraki-Chattan Cave from the front.*

चित्र 2. इन्द्रगढ़ की पहाड़ी में स्थित दरकी–चट्टान गुहा *Indragarh hill, Daraki-Chattan*

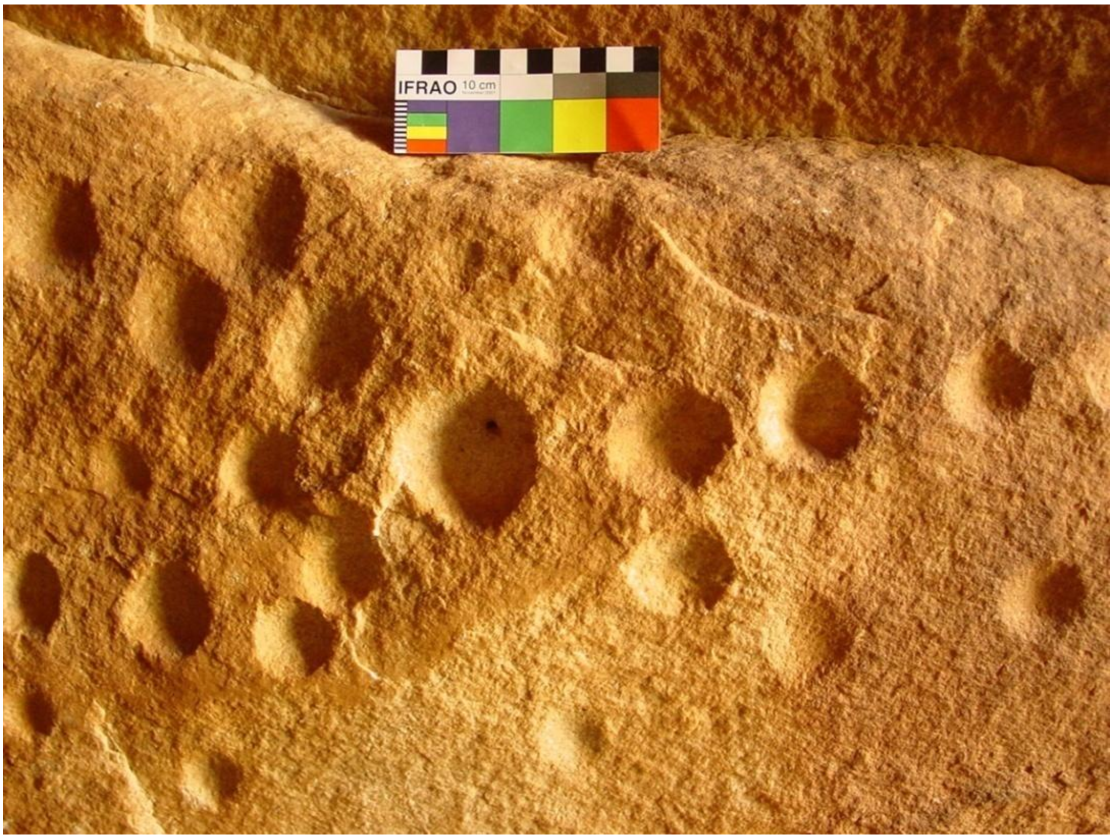

चित्र 3. दरकी–चट्टान गुफा में बने पुरापुराश्मीय कप मार्क्स *Pseudo-pattern of cupules on southern wall of the DC Cave.*

चित्र 4. शेर के आक्रमण का सामना करते धनुर्धर, चिब्बड़नाला, मध्याश्मीय *A hunter shooting an arrow on the head of a tiger who has caught hold of his fellow hunter's hand, a good example of the fellow spirit. Mesolithic. Chibbad nala.*

चित्र 5. विशाल वन वृषभ, चिब्बड़नाला, मध्याश्मीय *A big bison in red outline in Chormata rock shelter at Chibbad nala in Chambal valley. Early Mesolithic or Upper Palaeolithic. Courtesy Yann P. Montelle.*

चित्र 6. मृतक पशु का गिद्धभोज, चतुर्भुजनाथ नाला, मध्याश्मीय *Vultures scavenging a dead animal. Chaturbhujnath nala. Mesolithic.*

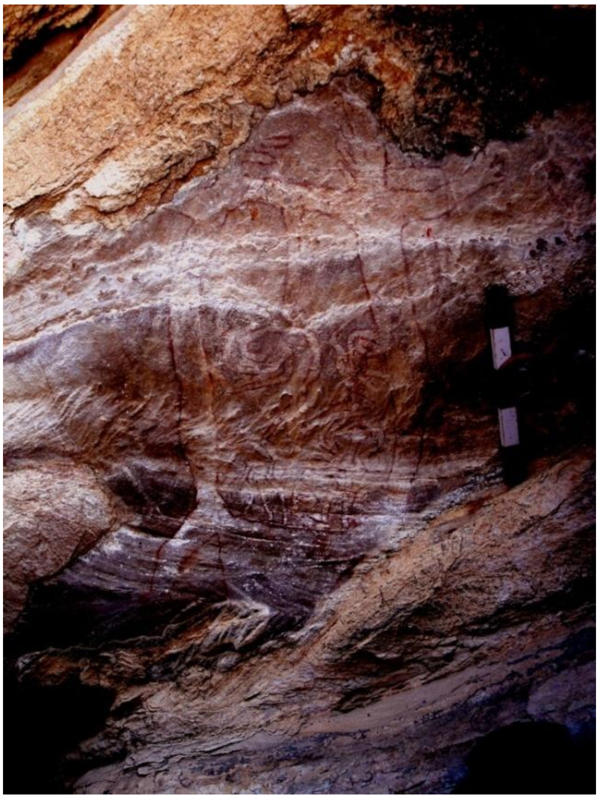

चित्र 7. विशाल मगर शल्य क्रिया युक्त गाँधी सागर, मध्याश्मीय *Dissected big reptile, more than 160 cm long. Gandhisagar. Mesolithic.*

चित्र 8. यात्री परिवार, चतुर्भुजनाथ नाला, मध्याश्मीय–नवाश्मीय *A family on a journey. Chaturbhujnath nala. Neolithic-Chalcolithic.*

चित्र 9. शैलाश्रय, मोडी *Rock shelters in big quartzite boulders at Modi in Bhanpura region, Chambal valley.*

चित्र 10. विशाल शैलाश्रय, चिब्बड़नाला *Big Rock shelter, Chibbad nala.*

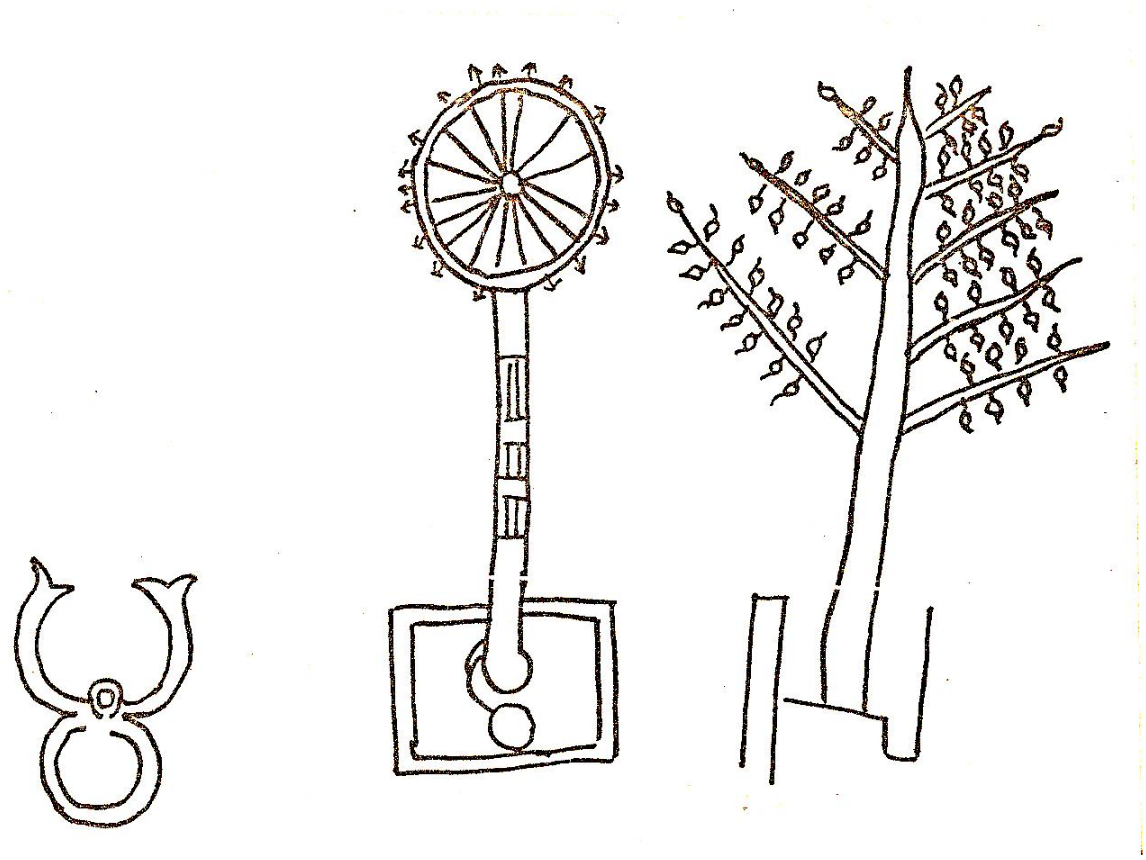

चित्र 11. बौद्ध चिन्ह, चिब्बड़नाला, ऐतिहासिक युग *Buddhist symbols in red colour. Chibbad nala, Chambal basin. Early Historic. After E. Neumayer.*